

[Year]

# कहन कबीर



Directed By  
Bansi Kaul

## कहन कबीर

लेखक : राजेश जोशी

निर्देशक :

### बंसी कौल

मंच पर प्रकाश आता हैं . जहाँ एक लाश ढकी हुई दिखाई देती हैं . सूत्रधार उसके पायती बैठे हैं . पार्श्व से गाना सुनाई देता हैं ।

गाना हमारे राम रहीम करीमा केसो, अलह राम सति सोई ।

बिसमिल मेटि बिसम्मर एकै, और न दूजा कोई ॥

तुरुक मसीती देहूरे हिन्दू, दुहूँठा राम दिखायी, ।

जहाँ मसीही देहुरा नाहि तहाँ काकी ठकुरायी ॥

कहे कबीरा दास फकीरा अपनी राह चलि भाई ।

हिन्दू तुरक का करता एकै ता गति लखी न जाई ॥

एक आदमी को तेजी से प्रवेश

आदमी सतगुरु कबीर साहब का देहान्त हो गया

अलग अलग दिशाओं से समूहों का आना शुरू हो जाता हैं . समूह उंगलियों उठा उठा कर समझ में न आने वाली ध्वनियों में बोलते हैं शोर सा पैदा हो जाता है

सूत्रधार एक दर्शकों से कबीर से इनका कोई लेना देना नहीं है . ये उनकी बानी के लिए नहीं उनके जिस्म के लिए लड़ रहे हैं . बल्कि हकीकत तो यह है कि जिस्म के लिए भी नहीं,, ये उसके रूपक के लिए लड़ रहे हैं. सब कबीर का इस्तेमाल करना चाहते हैं . सबको कबीर के झण्डों की जरूरत है . इस कबीर में से सब अपना कबीर तलाश रहे हैं . किसी को भी पूरा कबीर नहीं चाहिए ..... हर एक को आधा अधूरा चाहिए .... अपने अपने काम का चाहिए ..... सबकी अपनी अपनी व्याख्याएँ हैं, अपने अपने तर्क हैं. पूरा कबीर तो सिर्फ उस जनता का ही हो सकता है..... जिसके दुख सुख ..... जिसके स्वप्न और संघर्ष.....जिसकी भक्ति और मुक्ति सभी कुछ उसके शब्द शब्द में गुंथा है . समूह चक्कर लगाता है . समूहों से अरे शांत रहिए..... आप कबीर साहब का अपमान कर रहे हैं

- सूत्रधार 2    **दर्शकों से** मगहर छोटी से बस्ती है . आज सब काम धंधा बन्द है . इन सब की समस्या एक ही है कि कबीर साहब का अन्तिम संस्कार कौन करेगा और किस विधि से करेगा.....
- समूह एक:    तुम होते कौन हो कबीर साहब को छूने वाले . जिन्दगी भर तुम लोगों ने उन्हें नीच कहा..... कबीर साहब हमारे थे और हम ही उन्हें बाइज्जत दफन करेंगे .
- समूह दो    वाह इनकी बातें सुनिए....तुम्हारे सुलतान ने तो कबीर को बहुत पहले ही मरवा दिया होता..... कबीर को अपना बताने चले हैं . वो हमारे ही कंधों पर जायेंगे.....बस .
- समूह तीन:    देखिए ये काम हम पर छोड़ दीजिए ....साहब तो हम ही में से एक थे .....
- सूत्रधार 1    आप लोग इस तरह लड़ेंगे तो कोई फैसला कैसे होगा भाई .....1
- समूह तीन    फैसला करना तो हमें आता है . इस तरह नहीं होगा तो दूसरे ढंग भी हमें पता है .
- समूह चार    दूसरे ढंग से तुम्हारा क्या मतलब एं ....तुम समझते हैं तूम्हीं को आता है दूसरा ढंग.... हाथ लगा कर देखो....अभी पता चल जायेगा .
- समूह एक    क्या पता चल जायेगा....बताओ क्या पता चल जायेगा....हम हाथ लगायेंगे और सौ बार लगायेंगे...जनाजा तो अब हमारे ही कंधों पर जायेगा.....
- समूह दो    कह तो ऐसे रहे जैसे कबीर साहब इन्हीं के ही नाम का पट्टा लिख कर दे गये हों
- समूह एक    नहीं नहीं पट्टा तो आपके नाम का लिख गये हैं कबीर साहब . कबीर का मतलब जानते हैं आप लोग.
- समूह दो    मतलब मतलब की बात मत करो....उनकी बानी से तुम्हारे हिस्से कुछ नहीं लगने का है.... और जनाब मतलब निकालने की बात तो कीजिए ही मत....हम तो रेत से तेल निकाल लेते हैं ....यह तो कविता है, इसका मतलब तो जैसा चाहेंगे निकाल लेंगे.
- समूह तीन    साहब ने इतना साफ साफ कह दिया है कि वो आप में से किसी के नहीं हैं ...इतनी फटकार सुन कर भी आप लोगों का जी नहीं भरा कबीर साहब....हर चीज पर अपना ही हक जमाने को खड़े हो जाते हैं.....
- समूह दो    ऐं ज्यादा टर् टर् मत करो....
- सूत्रधार 1    मुझे तो लगता है कि इस समय कबीर साहब के बेटे को ही बुला लिया जाये....यही बेहतर हो
- सारे समूह    **मजाक उड़ाते हुए** डूबा वंश कबीर का , उपजा पूत कमाल

- सूत्रधार 2 कमाल के लिये आप इस तरह क्यों बोल रहे हैं आप ? साहब तो उन्हें बहुत प्रेम करते थे... **दर्शको से** लोई के चले जाने के बाद से कबीर साहब ने तो कमाल की देखभाल की ....
- समूह 3 उन्हें खुद ही सोचना चाहिये . वो तो जानते हैं ही कि कबीर साहब का सोचना एकदम अलग था. उन्होंने हिन्दू, मुसलमान, जोगी, जैन, शाक्त और बौद्ध किसी को नहीं माना...उन्होंने तो निरगुन और सगुन दोनों से ही इंकार कर दिया. ऐसे आदमी की सोच का तो एक अलग ही सम्प्रदाय बनना चाहिये कि नहीं ? हमने कमाल साहब से कहा पर साहब टस से मस नहीं होते हैं .
- समूह 4 हम तो उन्हीं को मुखिया बनाने के लिये तैयार हैं...पर कहते हैं कि कबीर साहब सम्प्रदाय बनाने के खिलाफ थे.....हम उनका सम्प्रदाय नहीं बनायेंगे..... वो कहते हैं कि हम उनका पंथ नहीं बनायेंगे .
- समूह 3 कमाल नहीं बनायेंगे तो क्या बनेगा नहीं.....हम भी तो साहब के अनुयायी हैं
- सूत्रधार 1 कबीर की चिन्ता सम्प्रदाय बनाना नहीं थी. **एक कोने में जाकर खड़ा हो जाता है** . वो समाज की नींवों को बदलना चाहते थे . उनके लिये उच्च वर्ण कोई आदर्श नहीं था. वे उसके मोह में कभी नहीं आये . वो कई धर्मों और पंथों के पास गये.....सबको समझा , जॉचा , परखा.....तर्क किया और सबकी सीमाओं से बाहर निकल आये...वो सचमुच का नया मनुष्य था और हमेशा मानवता के ही बारे में सोचता था... **समूहों से** आप लोगों को जैसा जो कुछ बनाना हो बना लीजियेगा.....पर पहले साहब का अन्तिम संस्कार तो हो जाने दीजिये.
- आदमी 1 इस सारी बहस में हमारे लिये कोई जगह नहीं है. यह पंडितों और मौलवियों और मठाधीशों की बहस है... ये इस काया को ही नहीं, आगे जाकर ये कबीर साहब के कहे हुए को भी नोच नोच कर खायेंगे...तरह तरह की व्याख्याएँ करेंगे . उसे अबूझ पहली बना देंगे और आप देखेंगे एक दिन ये लोग हमारे कबीर साहब को हमसे छीन लेंगे . ये हम ही से कहेंगे ...तुम कबीर को क्या जानों , वो तो बहुत गहरे थे, बहुत कठिन थे...बहुत बड़े ऋषि थे.....उनका क्रान्तिकारी रूप कहीं छिपा दिया जायेगा . एक दिन उनका फटकार कर सारे कट्टरपंथियों को लताड़नेवाला रूप छिपा दिया जावेगा . एक दिन उनका सुधारक वाला रूप छिपा दिया जावेगा, और ये जो लड़ रहे हैं न.... ये सब उसमें से अपने काम का चुन चुन कर एक-एक अपना-अपना कबीर बना लेंगे.....बस ।

- सूत्रधार 2 आप लोग आपस में फैसला कर ले...हमारी जरूरत हो तो बुला लें . हमारे लिए तो कबीर न आज मरे हैं न कभी मरेंगे ...अन्तिम संस्कार तो आपको करना हैं सो कर डाले जैसे चाहें
- समूह 1 ठीक है , ठीक हैं. ज्यादा बड़ी बड़ी बातें मत करें.....तुम कबीर का क्या करोगे ये हमें भी मालुम हैं.
- समूह 2 लगता है फैसला बातचीत से नहीं होगा
- समूह 1 फैसला तो अब हम करेंगे....जिसमें दम हो रोक ले
- समूह 3 हाथ लगा कर देखों...फिर बताते हैं कि किसमें कितना दम हैं
- सारे समूह आपस में भिड़ जाते हैं . सूत्रधार देह से चादर हटा देता हैं. वहाँ सिर्फ फल दिखाई देते हैं . सारे लोग जहाँ के तहाँ रुक जाते हैं.
- सूत्रधार 1 लीजिये फैसला तो कबीर साहब ने खुद ही कर दिया.....लगता हैं उन्हें पहले ही इस बात का भान हो गया था कि ये सारे सम्प्रदाय कैसे उनकी मिट्टी खराब करेंगे . इसलिये उन्होंने अपनी काया को फूलों में बदल लिया और ये लोग आज उनकी काया के ही फलों को चुनेंगे.....उनके दर्शन को नहीं, उनकी बातों के फूलों को नहीं, वो जो पदों में, रमैणियों, साखियों और उलटबासियों में तरह तरह के फूल छोड़ गये हैं, उन्हें कौन चुनेगा....उन्हें कौन ले जायेगा....ये लोग तो उन्हें ले जाने से रहे.....कबीर सचमुच ही संत थे, उन्होने अपनी काया को ही फूलों में बदल डाला, उनके भार से न धरती दबी न किसी के कन्धे....
- सूत्रधार 2 क्या कहा तुमने संत थे ? **दर्शको से** यह अच्छा हैं. एक विद्रोही को संत कह दो . उसके बारे में तरह तरह के रूपक गढ़ लो. जनाब रूपकों की भी एक राजनीति होती हैं , बहुत ही बारीक और छिपी हुई . अब कबीर के तरह तरह के रूपक गढ़े जा रहे हैं . उन्हें कॉट छॉट कर अपने अनकूल बनाया जा रहा हैं . इसी को कहते हैं मनोनुकूलन का कॉईयापन
- सूत्रधार 1 इसे तो हर बात पर शक करने की आदत सी पड़ गई हैं. तो लीजिये आप कबीर साहब की काया के फूलों को चुनिये . आप अपने संप्रदाय के हिसाब से अंतिम संस्कार करें . आईये चुनिये इन फलों को . आगे बढ़िये . सब लोग ग्लानि महसूस करते हैं . गाना गाती हुई जोगन का प्रवेश . गाने के मध्य समूह वाले फूलों को उठा कर ले जाते हैं.
- गाना सुगवा पिंजरवा छोरि भागा .

इस पिंजरे में दस दरवाजा ।।  
 दस दरवाजा किवरवा लागा .  
 अँखियन सेती नीर बहन लाग्यों ।  
 अब कस नाहि तू बोलत अभागा ।।  
 कहत कबीर सुनो भाई साधौ ।।  
 उड़िग्यो हँस टूटि गयो तागा ।  
 सुगवा पिंजरवा छोरि भागा ।।

### जोगन एवं समूह का प्रस्थान. कमाल का प्रवेश

- सूत्रधार 1 आओ कमाल आओ....क्या तुम्हें भी कबीर साहब के फूल चाहिये ?
- कमाल नहीं मेरे लिये दादा की बानियाँ ही उनके फूल हैं...ये मुरझाने वाले फूल ले कर मैं क्या करूँगा. दादा ने ने तो पहले ही कह दिया था
- सूत्रधार 2 कबीर सुख कौ जाई था, आगे आया दुख
- जाहि सुख धरि आपणें, हम जाणे अरु दुख
- कमाल कबीर सुख के लिये जा रहा था और दुख सामने आगया. तो दादा ने कहा – ए सुख तू अपने घर जा, अब मैं जानूँगा और मेरा दुख जानेगा. अब मेरी राह तो वो ही हैं. मैं जानता हूँ बहुत से लोग मुझसे नाराज़ हो गये हैं.. पर दादा ने लोगों के नाराज़ होने की परवाह नहीं की, तो मैं क्यों करूँ. मैंने तो इसलिये सबसे इंकार कर दिया कि मैं पंथ नहीं बनाउँगा .... सुन रहा हूँ सूरत गोपाल ने काशी में और धरमदास ने मध्यप्रान्त में दादा का सम्प्रदाय बनाना शुरू कर दिया हैं. जो हो मैं अगर उनकी विरासत को आगे न बढ़ा सकूँ तो उससे दगा तो नहीं करूँगा . जानता हूँ इसकी कीमत देना पड़ेगी. कबीर साहब ने कहा ही था.. कलाल की भट्टी पर बहुतेरे आ बैठे, लेकिन वह मदिरा ऐसी थी कि उसे वो ही पी सकता था जो उसका मूल्य दे सकें...और जानते हो उसका मूल्य क्या था, उसका मूल्य था अपना शीश...अपना सिर...जो अपना सिर दे सकता था, वहीं उसे पी सकता था. कबीर साहब की बानी भी ऐसी ही मदिरा है जो इसे चखना चाहता हैं उसे अपना सब कुछ देना होगा...बरना रस नहीं मिलेगा.
- गुनगुनाता हुए कमाल का प्रस्थान .**

- सूत्रधार 2 कबीर की बानी के फूल कौन चुनेगा ? उनकी बानी के फूल तो उन्हीं को चुनना होगा जिनके लिये कबीर ने लिखा. जिनके लिये कबीर लड़े . उनके लिये कबीर की बानी एक संघर्ष भी हैं, एक स्वप्न भी और एक उत्सव भी. उजाले का उत्सव, जीवन का

उत्सव, अंधेरो से मुक्ति का उत्सव. अपने दुखों और अपने दैन्य से मुक्ति का उत्सव. उनकी आवाज में आकर तो स्वयं कबीर भी मुक्त हो जाते हैं, पंथियों से , पंथों से, तरह तरह की व्याख्याओं से मुक्त हो जाते हैं .

सूत्रधार 1 कबीर को वहाँ सुनने की ज़रूरत है, जहाँ इस आवाज में आकर इश्क, इश्क की होशियारी से मुक्त हो जाता है. यह आवाज दो को एक में बदल देती है ।

समूह हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या ।  
रहे आजाद या जग से , हमन दुनिया से यारी क्या ।।  
जो बिछुड़े है पियारे से, भटकते दर-बदर फिरते ।  
हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या ।।  
खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है ।  
हमन गुरुनाम सच्चा है, हमन दुनिया से यारी क्या ।।  
न पल बिछुड़े पिया हमसे, न हम बिछुड़े पियारे से ।  
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या ।।  
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से .  
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या ।।

सूत्रधार 1 छः सौ बरस की लम्बी दूरी पार कर अगर कबीर यहाँ प्रकट हो जाते तो कैसा लगता उन्हें यह हमारा समाज? जिस सत्य के लिये उन्होंने अपनी आँखरी सॉस तक संघर्ष किया...जिसका उन्होंने अलख जगाया...बार बार लोगों को समझाया कि..

मौको कहाँ ढूँढे रे बन्दे , मैं तो तेरे पास में ।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।। .....

ईश्वर को यहाँ वहाँ ढूँढने वालों , वो तो तुम्हारे अपने भीतर हैं.... कैसे लगता उन्हें धर्म के नाम पर आये दिन होने वाले ये दंगे ? कैसा लगता उन्हें जातियों के आधार पर बनी हुई फौजो का बर्बर ताण्डव ? कितने बरसों से यह समाज उनके पद गा रहा है, पर बढ़ता ही जाते हैं जात-पॉत के, पंथों और धर्मों के पाखण्ड....चीखते चिल्लाते बेसुरे लाउडस्पीकर ही जैसे हमारे समय का धर्म हो गये हैं.....घृणा ही जैसे सबसे बड़ा धर्म बना गया हो.

सूत्रधार 2 तुम निराशावादी हो. इस देश की जनता आस्तिक है, धार्मिक नहीं... जो पाखण्डी हैं वो इस प्रकृति की लीला को नहीं समझ सकते . वो बहरा भी है और अंधा भी...

पर ज्यादातर लोग ऐसे नहीं हैं ... वो भी कभी कभी बहकावे में आ जाते हैं ....इन पाखण्डियों के चंगुल में फंस जाते हैं... इसलिए एक कबीर की जरूरत है इस समाज को...बहुत सारे कबीरों की जरूरत है...आज कबीर के जन्म मृत्यु और उनके पूरे जीवन को लेकर न जाने कितने किस्से हैं....कुछ जनता ने बनाये कुछ दूसरों ने.....!

### तीन विद्वानों का प्रवेश.

विद्वान एक      क्या....क्या कह रहे थे आप सूत्रधार जी

सूत्रधार एक:    मैं कह रहा था कि इस समाज को जगाने के लिए हमें कई कबीरों की जरूरत है आज .

आदमी एक      हमारे सूत्रधार जी कह रहे थे कि कबीर साहब अगर आज आ जाते तो उन्हें कैसा लगता हमारा आज का समाज

विद्वान दो :    अब यह इच्छा तो आपकी पूरी होने से रही सूत्रधार जी .

सूत्रधार एक:    यह मत कहिए महाशय, समय का प्रतिशोध बहुत विकट होता है . बादशाहों के सारे कारनामों इतिहास की किताबों में बंद हो कर रह जाते हैं पर कवियों के कारनामों तो दिलों पर जमें रहते हैं सदियों तक.... अभी तो कई ऐसे दिलवाले होंगे जिनमें कबीर जिन्दा है....थोड़ा थोड़ा कबीर तो हम सब में भी जिन्दा होगा..

विद्वान तीन    समाज में आये दिन हो रहे तमाशों के बाद भी आपको लगता है कि हजारों में कबीर जीवित हैं

सूत्रधार दो      जीवन का संहार करने वाले मूटठी भर होते हैं..... उसे संवारने वाले करोड़ों होते हैं ... यह दुनियाँ ऐसे ही तो नहीं चल रही है अपने आप.....करोड़ों हाथ इसे बचाते हैं ....बनाते हैं...सजाते हैं...संवारते हैं...उन सबमें जिन्दा है हमारा कबीर....

आदमीएक    कबीर साहब तो कह ही गये हैं कि इस घट के अन्दर...

आदमी दो    किस घट के अन्दर....

समूह प्रस्थान करता है . तीनों विद्वान मंच के मध्य में खड़े होते हैं ।

सभी विद्वान    इसी घट के अन्दर.....इसी देह के अन्दर...सब कुछ है . इसी में बाग बगीचे हैं . इसी में सिरजनहारा हैं. इसी में सात समुन्दर हैं . इसी में नाँ लाख तारे हैं . इसी में पारस मोती हैं और इसी में उसे परखने वाला भी है . इसी में अनहद गरज रहा है .



इसी में फहारे उठ रही हैं, अब जिस घटके अन्दर इतना कुछ है उसमें क्या हमारे  
कबीर साहब नहीं होंगे

समूह गाता है मौको कहीं ढूँढे रे बन्दे , मैं तो तेरे पास में ।

ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ।।

ना तो काउन क्रिया करम में, नाहीं जोग बैराग में .

ना मैं छगरी ना मैं भेंड़ी, ना मैं छुरी गड़ास में ।।

नहिं खाल में नहि पूँछ में, ना हडडी में मांस में ।

मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास में ।।

खोजी होय तो तूरतैं मिलिहौं, पल भर की तलास में .

कहैं कबीर सुनो भाई साधो सब सॉसन की सांस में ।।

**तीनों विद्वान गायकों को रोक कर सूत्रधार के पास आते हैं**

वि. एक. आप करना क्या चाहते हैं...आपके इरादे कुछ नेक नहीं लग रहे हैं हमें .

वि. दोः कोई तन्त्र मंत्र या क्या कहते हैं उसे.....प्लेन चिट वगैरह पर कबीर की आत्मा को  
बुलाने का विचार तो नहीं कर रहे हैं आप

सूत्रधार एक : जी नहीं . हमारे पास तो इससे भी आसान और अच्छा उपाय है

वि. दो: देखिए हम आपको भी जानते हैं और आपके इस रंग विदूषक को भी..... आप लोगों  
की अक्ल कुछ टेढ़ी ही चलती है हमेशा.....

वि. तीन यह कबीर साहब का मामला है, , वो एक संत थे, , कोई विदूषक नहीं थे.....

वि. एक फिर कबीर साहब की हर बात पर एक न एक विवाद बना ही हुआ है . अब आप  
लोग कोई नया विवाद मत खड़ा कीजिए ।

सूत्रधार दो: हमारा ऐसा कोई इरादा नहीं। हम तो सत्य की उस लड़ाई को आगे बढ़ाना चाहते हैं  
जो कबीर साहब ने शुरू की थी . जिसे भक्तिकाल के कवियों ने लड़ा.....जिसे  
सूफियों ने लड़ा .....जिसे आजादी के दीवानों ने लड़ा ।

वि .दो . पर आप कबीर को लायेंगे कैसे ।

सूत्रधार एक: नाटक

विद्वान न अटक

सूत्रधार न अटक नहीं नाटक . नाटक का मतलब ही है एक और सृष्टि . जो हो चुका की पुनर्सृष्टि . कल्पना की सृष्टि, यथार्थ की पुनर्सृष्टि . नाटक में सब कुछ संभव है श्रीमान . नाटक ने तो भगवानों को मंच पर उतार दियो . कबीर तो संत थे.... और हजारों में आज भी जिन्दा हैं . लेकिन कबीर साहब की भूमिका करेगा कौन

तीनों विद्वान **आगे बढ़ कर** हम है ना .

सूत्रधार 1 जी हों . आप लोग तो ठहरे महान विद्वान . आपने कबीर साहब के बारे में पढा भी बहुत है और दूसरे की किताबों को देख देख कर अपने नाम से लिखा भी बहुत है . लेकिन मुझे आप लागों में कबीर साहब की भूमिका करने की योग्यता रत्ती भर नज़र नहीं आती .

सूत्रधार 2 **विंग्स की तरफ इशारा करके** मेरा ख्याल है कि यह गणेश सबसे अच्छा कबीर होगा . उसकी दाढ़ी भी है और गा बजा भी लेता हैं . दिन भर कबीर साहब की उलटबॉसिया सुनाया करता हैं ।

सूत्रधार 1 हों हँ गणेश ही ठीक रहेगा . अरे भई गणेश बहार आओं . हम आपको यहाँ कबीर बान रहे हैं और आप उधर खड़े गप्प लड़ा रहे हैं

वि. दो भरत मुनि ने इन शूद्रों को यह पाँचवाँ वेद दे कर ही गलती की....ये सब कुछ भ्रष्ट करके ही मानेगे

वि एक: चलो अब हमारा यहाँ कोई काम नहीं बचा

सूत्रधार एक: अरे आप कहाँ जा रहे श्रीमान . आप ठहरे महान विद्वान . अगर बीच में आगई कोई अड़चन . कौन करेगा हमारा मार्गदर्शन , इसलिये आप यहीं ठहरे श्रीमान ।

वि.1 अच्छा.... तो ठीक हैं रुक जाते हैं .

वि तीन . **वि . 1 को खींचते हुए** . पूछ लेना अपने इस कबीर से....कुछ पहले वाला विद्वान था कुछ यह भी विद्वान होगा **गायक मंडली आती है**

सूत्रधार दो लीजिए यह गायक मंडली भी आ गयी..... कलाकारों से आप लोग इधर बैठ जाइये . और तैयार हो जाइए हों तो गणेश.....तुम कबीर बन जाओ . **एक आदमी गणेश को टोपी पहनाता है .**

वि . एक . पर यह तो गलत है . यह कबीर कैसे बन सकता है

जन एक अरे कैसे का क्या मतलब हम तो हैं ही कबीरे . जिसने कबीर से लौ लगाई वो समझो हो गया कबीर

वि . दो यह तो रहस्यवाद बोल रहा है .

जन दो: सोई तो है महाराज . आप जिसे बांचते हो , हम उसे जीते हैं . हमारे लिए तो कबीर में हम हैं और हम में कबीर साहब हैं

सूत्रधार दो : तो शुरू करें . हॉ गणेश शुरू करो

कबीर अब हम गणेश नहीं कबीरदास है .

सूत्रधार 1 हॉ गणेश महाराज ....अरे नहीं कबीर दास जी शुरू कीजिये ।

कबीर मैं तो कई दिनों से इस धरती पर आया हुआ हूँ . घूम घूम कर सारा तमाशा देखता हूँ . मेरा समय एक भयानक संक्रमण का समय था , और आज भी संक्रमण का समय है . बदलने को तो बहुत कुछ बदला है , पर बुराईयों ने भी अपना रूप और बाना बदल लिया हैं . बुराईयों पहले जैसी ही है , अत्याचार भी वैसे ही है , अन्याय भी वैसे ही है , सिर्फ बाना बदल गया है .

सूत्रधार 1 अरे अरे गणेश महाराज.....नहीं कबीर दास जी आप तो विद्वानों के साथ खड़े होकर विद्वानों वाली भाषा बोलन लगे . आप कुछ ऐसी भाषा बोलियें जो हम जैसे नासमझ लोगों की समझ में आ जायें , कुछ उलटबॉसियों ही सुनाईये ...

कबीर उलटबॉसी ?

समूह हॉ हॉ उलटबासी...

कबीर बैल बियाई , गई भई बॉझ . बछड़ा दूहे तीनों सॉझ ।

मकड़ी धरी , मांछी छीछ हारी , . मॉस पसारी चील रखवाली ।

मूसा खेवट, नाव बिलैया . मेंढक सौंवे , सॉप पहरिया ॥

नित उठि सियाल, स्वाँग सू जूँझे . कहे कबीर कोई बिरला बूझे ॥

समूह अरे कबीर दास जी कुछ गा के भी सुनाईये .

कबीर गा के

समूह हॉ

कबीर एक अचंभा देखा रे भाई , ठोंड़ा सिंह चरावे गाई ।

पहिले पूत पीछे भई माई , चेला के गुरु लागै पाई ॥

जल की मछली तरिवर ब्याई , पकड़ि बिलाई मुरगै खाई ।

तलिकार साखा उपरि करि मूल , बहुत भौंति जड़ लागै फूल ॥

कहैं कबीर या पद को बूझैं , ताकौ तीन्यो त्रिभुवन सूझैं ॥

समूह गाता गाता कबीर के पीछे मंच के बाहर चला जाता है ।

सूत्रधार वो एक संक्रमण का समय था . पुराना जा रहा था और नया आने को थो . सामंतों की असल भूमिका खत्म हो चली थी . उसको खत्म करने वाली ताकतें उसी के गर्भ से जन्म ले रहीं थीं . व्यापारी पूंजी का बोलबाला शुरू हो चुका थो . व्यापार , खेती किसानों और पशु पालन का काम वैश्यों के हिस्से आ गया थो . नये काम धंधे पैदा हो रहे थे . उस दौर के सारे शिल्प शुद्र मानी जाने वाली जातियों के हाथ थे . वर्ण व्यवस्था टूट रही थी और जातियाँ आकार ले रही थीं . इसलिए भक्ति और दर्शन पर भी अब सिर्फ बामनों और मुल्ला मौलवियों का कब्जा नहीं बचा थो . यह भी शिल्पकारों के हाथ आ गया था सच पूछो तो मैं इन्हीं की बात कर रहा था .... लेकिन इसके साथ ही मैं उस जमाने की भी बात कर रहा था, जो करवट बदल रहा था.... इसलिए बहुत सारे बिचौलिए पैदा हो गये थे . बाजार बढ़ रहा थो . शिल्पकार माल पैदा करते.....बिचौलिए उन्हें बाजार में व्यापारियों तक पहुँचाते .....इनके अपने कुचक्र थे . पर जो नई ताकतें पैदा हो रही थीं, उनका फायदा इस बात में बिल्कुल न था कि लोग धर्म के नाम पर आपस में दंगा फसाद करें ....लेकिन जिन सामंतों के हाथ से दिनों दिन ताकत छिनती जा रही हो वो भला कैसे चुप बैठते.....इन्हीं सामंतों की कृपा पर जीने वाले विद्वान, पंडित और मौलवी थे....जो सामंतों की ताकत को कायम रखने में लगे थे..... इसलिए आये दिन नये नये वितंडे खड़े करते रहते थे . जो मेहनतकश जनता थी उसे सताने वालों में हिन्दु सामंत भी थे और मुसलमान सामंत भी . वो एक ऐसा समय था जिसमें छह दर्शन और छप्पन पाखण्ड थे .....

सूत्रधार एक एक दिन की बात है . एक सामन्त की सवारी जुलाहों के गोंव से गुजर रही थी . उसने सुन रखा था कि यहाँ के जुलाहे बहुत अच्छा कपड़ा बुनते हैं . सुन रखा था कि एक कबीर नाम का जुलाहा है जो कमाल की बुनाई करता है . सामंत ने अपने डेरे वालों से कहा, चलो यही डेरा डाल दो हम यहाँ के जुलाहों का काम देखना चाहते हैं

.....' दृश्य दो .....'

घर के बाहर का दृश्य . रंगीन तागे सूख रहे हैं . एक ओर लोई बैठी उन्हें सुलझा रही है और दूसरी ओर कबीर भी काम में लगा है . दोनों आपस में बातें कर रहे हैं .

कबीर अजीब तमाशा है .

लोई कैसा तमाशा

कबीर            यही तमाशा..... यज्ञ करने वाले अन्न जलाते हैं.....बामन नीच जात कह-कह कर हमारा अपमान करते हैं. हम जुगी हैं तों क्या आदमी नहीं हैं . मूसलमान लोगों को बहकाते हैं . गरीब लोग पिस रहे हैं , मैं देखता हूँ तो सुलगन सी उठ खड़ी होती है . तुझे कोई चिन्ता नहीं होती लोई ?

लोई            किसकी चिन्ता

कबीर            यह जो दुनियाँ में इतनी बेचैनी फैली है

लोई            **मुस्कुराकर** मुझे इस सबकी बेचैनी नहीं होती , बस एक बेचैनी होती है **कबीर प्रश्नवाचक की तरह देखता है** तू जब बेचैन होता है, तो होती है . जुगी जुलाहे क्या और नहीं है हमारी बस्ती में , जो तू इतना व्याकुल है

कबीर            तू स्त्री है..... माया तेरे घट घट में है.....

लोई :            साधुओं ने तुझे बौरा दिया है कबीरे . अगर स्त्री माया है तो पुरुष क्या है , सब भटक रहे हैं . सिद्धों जैसी अटपटी बातें मत कर और न ही नाथों और कापालिकों की तरह डराने की कोशिश करे . बंगाल की कामरूप जादूगरनियों की बात सुनती आयी हूँ.....पर सब झूठ

कबीर:            यह सब एक मेला है लोई, लगता है और उठ जाता है . जो इसी में भूला रहता है, वह क्या जानेगो . इसी से तो दुख होता है.....

लोई            दुख....तू जानता है दुख क्या है .

**बाहर से अचानक बहुत सारी आवाजें आती हैं . कमाल घर में प्रवेश करता है**

कमाल            माई , दादा कहाँ है ? अरे दादा, बहुत बड़े सामन्त आये हैं आपसे मिलने . खूब सारे नौकर चाकर हैं उनके साथ ।

नौकर            **प्रवेश करता है** क्यों ? कबीर यहीं रहता हैं . हम आ गये .... महाराज भी आ गये .

**सामंत का प्रवेश . कबीर अचानक आये लोगों की ओर देखता है**

नौकर    एक    अरे टुकर टुकुर क्यों देखता है, खुद महाराज तेरे दरवाजे आये हैं, जो भी अच्छा कपड़ा बुना है ला और नजर कर .

सामन्त:            बड़ी तारीफ सुनी है तेरी उंगलियों की . लोग तो डाह के कारण तेरी चुगली खाते हैं , पर मैं ऐसी चुगलियों पर कान नहीं धरतो . आज से तेरी खातिर मेरा खजाना आठों पहर खुला रहेगा . तेरी कारीगरी की मुँह मांगी कीमत दी जायेगी , मन में कोई संकोच न लाना .

कबीर इसमें संकोच किस बात को . इलाके के सेठ व्यापारी लालच दे देकर हार गये , पर मैं ने अपनी कारीगरी पैसों के बदले नहीं बेची

सामन्त मेरे रहते तुझे माल बेचने की जरूरत ही क्या है अब तो कोई और खरीदने की कोशिश भी करे तो खबर देना, मैं उसे जिन्दा जमीन में गड़वा दूँगा

**नौकर अरगनी पर टंगे कपड़े उतारने को बढ़ते हैं**

कबीर मैं ने तो पहले ही कहा कि मैं मुनाफे के लिए जुलाहे का काम नहीं करतो . आपका आना बेकार गया, इस खातिर माफी चाहता हूँ

सामन्त **गुस्से में** क्या दूसरों की तरह मेरे लिए भी बेचने की मनाही है

कबीर मैं ने तो अपने मन की सच्ची बात कह दी , अब आप जो चाहें मतलब निकालें

सामन्त मेरे पास मतलब निकालने का वक्त नहीं , नालायक तेरी मौत तो नहीं आयी

कबीर मौत तो एक दिन सबकी आनी है . वो तो किसी का ख्याल नहीं करती न रंक का, न राजा को . मरने की बात जानता हूँ , तभी तो इतनी मेहनत की कीमत नहीं आँकता.

नौकर एक अगर कीमत नहीं आँकना चाहता तो अन्नदाता के चरणों में खुशी खुशी तमाम चीजें भेंट क्यों नहीं कर देता.

कबीर भेंट देना न देना मेरी मर्जी पर मयस्सर है . फिर राजा को किस बात की कमी, जो उसे भेंट करूँ

सामन्त तू किसी को आपनी कारीगरी बेचता नहीं , किसी को भेंट नहीं करता, तो यह किस लिए है ?

कबीर जरूरत होने पर भी जिसमें इस खरीदने की ताकत न हो, मेरी कारीगरी उसी के लिए है .

सामन्त मुँह मांगी कीमत पर भी क्या तू माल नहीं देगा ?

कबीर लोभ लालच के लिए बात बदलना मेरी फितरत नहीं . एक दफा पूछो तो वही बात और सौ दफा पुछो तो वही बात

सामन्त **गुस्से में** चिथड़े चिथड़े कर दो सारे कपड़ों को.....

नौकर सारे कपड़ों को फाड़ देते हैं....लोई कबीर को देखती है . कबीर सारा तमाशा चुपचाप देखता रहता है सारा कारवों प्रस्थान करता है

लोई इतनी बड़ी बड़ी बातें करते हो, तुम्हारी आँख के सामने तुम्हारी कारीगरी की धज्जियाँ उड़ी नंगी तरवारे लहराईं गयीं, सामन्त की इतनी दुत्कार .....इतनी अंट संट बातें सुनी तब तुम्हारे कलेजे में गुस्से की आग क्यों नहीं भभकी ? तुम मरने मारने पर उतारू क्यों नहीं हुए ? इतने ज्ञान के बाद भी तुममें जीने का मोह है ? मौत का डर है ? फिर तुम्हारा सारा गुस्सा किस दिन के लिए है ?

कबीर लोई एक आदमी के गुस्से से कुछ नहीं होगो . वो तो आत्म हत्या की तरह है . जिस दिन मेरे गुस्से की छूत जन जन के मन को छू जायेगी, उस दिन इन्सानों की दुनियाँ में न कोई राजा होगा न रंक, न उंच नीच होगी न सच होगा न झूठ . न पाप होगा न पुण्य . न अमीर होगा न गरीब . न मन्दिर होगा न मस्जिद..... न फौज होगी न हथियार . किसी को यह हक नहीं होगा कि अपनी ताकत के दम पर दूसरे की मेहनत के टुकड़े टुकड़े करवा दे.....

सूत्रधार एक कबीर सो धन संचिये , जो आगैं कूँ होई ।

सीस चढ़ावे पोटली , ले जात न देख्या कोई ।।

देख लिया आपने , कबीर दास जी कहते हैं उसी धन का संचय करो न, जो आगे काम दे . तुम्हारे इस धन में क्या रखा है ? गठरी सिर पर रख कर किसी को भी आज तक ले जाते नहीं देखा । किस्सा तो किस्सा है . सच भी हो सकता है और झूठ भी . पर जो बानी में आया वो तो खरा सच है

समूह गाता है अब न बसूं इहि गांइ गुसाई , तेरे नेवगी खरे सयाने हो राम ।

नगर एक तहां जीवधर महता, बसे जु पंच किसानां ।।

नैनूं नकट सवनूं रसनूं इन्द्री कहया ना माने हो राम ।

धरमराई जब लेखा मांग्या, बाकी निकसी भारी ।।

पांच किसानो भाजि गये हैं, जीवधर बांध्यो पारी हो राम ।

कहैं कबीर सुनोहु ने संतों, हरि भजि बाँधों भेरा ।।

अबकी बेर बकसि बंदें कों, सब खेत करो नबेरा हो राम ।

..... दृश्य तीन .....

विद्वान आपस में बातें करते हैं . समूह एक तरफ बैठा प्रतीक्षा करता है

- वि. एक      कबीर के इस छह सौ वे दिन पर हमारा उत्तरदायित्व है कि हम लोगों को कबीर के बारे में बताये
- वि . दो      लेकिन मैं तो आपके मत से सहमत नहीं हूँ . आपने जो व्याख्या की है.....
- वि . तीन      देखिए यह परिसम्वाद का मामला है.....बेहतर होगा कि हम इस पर एक राष्ट्रीय परिसम्वाद आयोजित कर डालें
- वि . एक      पर राष्ट्रीय परिसम्वाद के लिए तो धन वगैरह का भी इंतजाम करना होगा.....
- वि. दो      **तीन की ओर इशारा करके** जब तिवारी जी हमारे साथ हैं तो फिर फिकर की क्या बात है.....इनकी तो बड़ी पहुँच है
- वि . तीन      वो सब तो होता रहेगा . पहले ये जो लोग हमसे कुछ सुनने की उम्मीद में यहाँ आये हुए हैं इनसे तो बातें कीजिए.....कबीर को हमें जनता के बीच ले जाना है
- वि . एक      कबीर तो पहले से ही जनता के बीच में है महाशय.....और यहाँ तो कुछ लोग पहले से ही कबीर बनने की फिराक में है . अब इन गणेश महाशय को ही देख लीजिये .  
गणेश खड़ा होता है . एक खड़े होकर
- जन एक      गणेश भईया, आप बैठ जाईये , हम देख लेते हैं .
- जन दो      हर्ष भईया आप भी बैठ जाओं , हम है न यहाँ .
- वि . दो      बहस बाद में कर लेंगे.....पहले **समूह की ओर इशारा करे** इनसे बातें कर लें
- वि . तीन      ठीक है
- वि . एक      **समूह से** कबीर के किस्से तो आप लोगों को बहुत मालूम है , पर कबीर को सिर्फ गाते बजाते ही हो या कुछ समझते बूझते भी हो
- वि . दो      ये लोग गा बजा लेते हैं ये ही क्या कम है **वि. एक से** यूँ तो आप भी कितना समझते हैं यह हम भी जानते हैं .
- वि . तीन      इस समय आप लोग आपस में बहस मत करिये
- वि . एक      मुझसे मत उलझिये .
- वि. तीन      न मौका देखते हैं न बात की गंभीरता को समझते हैं
- जन एक      कहो महाराज अब आप ही कहो कबीर साहब के बारे में
- समूह      हॉ हॉ कुछ कहो साहब के बारे में
- वि . एक      कबीर एक रहस्यवादी कवि थे



- सूत्रधार दो **मजाक बनाते हुए** वो साधारण व्यक्ति नहीं थे, यही कहेंगे न आप
- वि . एक वो रामानन्द के शिष्य थे , रामानन्द जी के बारह शिष्य थे
- सूत्रधार दो रैदास , कबीर , पन्ना , सेना जी , पीपा जी , आशानन्द जी , भवानन्द जी, महानन्द जी , परमानन्द जी , श्री आनन्द जी , सुखानन्द जी और सुरसुरानन्द जी .
- वि . एक इनमें कई ऐसे थे जो दलित और पिछड़ी हुई मानी जाने वाली जातियों से आये थे . अलग अलग कारीगरियों से जुड़े लोग थे . रैदास जूता गांठते थे . भई जोशी जी मुझे तो लगता है कि कबीर साहब ने रामानन्द की गोष्ठियों से ही अद्वैतवादी दर्शन को जाना होगा
- वि . दो शेख तकी जैसे कई सूफियों के साथ सत्संग करने का भी उन्हें अवसर मिला था . ऐसा लगता है कि भारत में तब तक सूफियों का प्रभाव भी होने लगा था . कबीर साहब की भाषा में जो अरबी और फारसी के शब्द मिलते हैं... वो भी इसी प्रभाव से आये होंगे . कबीर साहब ने इसी से इस्लाम धर्म को जाना होगा
- वि . एक यह जो रहस्यवाद है, कोई आसान चीज नहीं है . एक गहन वन की तरह है..... इसकी परिभाषा करना हो तो समझो.....
- वि . दो **मजाक उड़ाते हुए** एक अमृत कुण्ड को मिट्टी के घड़े में भरना है **गम्भीर होकर** इसमें जीवात्मा दिव्य और अलौकिक भक्ति से अपना संबंध जोड़ना चाहती है . आत्मा उस दिव्य शक्ति से इस प्रकार एकमेक हो जाती है कि, आत्मा में परमात्मा के गुणों का प्रदर्शन होने लगता है , और परमात्मा में आत्मा के गुणों का ..
- वि . तीन यह राष्ट्रीय परिसंवाद नहीं है भाई साहब . इन बातों को वहाँ बुद्धिजीवियों के लिए बचाये रखें तो बेहतर हो
- वि . एक मुझे लगता है कि इस गायक मंडली के लोगों को भी हमें राष्ट्रीय परिसंवाद के लिए बुला लेना चाहिए
- वि . दो हों गा बजा तो ये लोग अच्छा लेते हैं . यूँ भी आजकल ये बौद्धिक संगोष्ठियाँ ज्यादा ही नीरस होती जा रही हैं श्रोता तो जैसे इनसे गायब ही हो गया है
- सूत्रधार 1 अरे भाई श्रोता कब तक आयेगा.....बातें भी तो वोई वोई होती हैं हर जगह . नया कुछ तो न सोचा जा रहा है न बोला जा रहा है
- वि एक **नकल करके** नया कुछ तो न सोचा जा रहा है न बोला जा रहा है . नया तो सिर्फ आप सोचते हैं.....बाकी लोग तो घिसे हुए रिकार्ड हैं

सुत्राधार      अरे आप तो बुरा मान गये भाई.....मैं आपके लिए थोड़े न कह रहा हूँ..... मैं तो एक सामान्य बात कह रहा थो .    वैचारिक गोष्ठियों में उब बढ़ रही है .    इसमें कुछ मनोरंजन का तत्व भी जुड़ना चाहिए

वि . दो      आप तो हर चीज को उत्सवधर्मी बना देना चाहते हैं.....

वि . तीन      साधारण जनता के लिए कबीर एक उत्सव ही हैं.....जीवन का उत्सव.....

वि . एक      **गायक मंडली से** अरे भाई आप लोग कोई पद नहीं गा सकते कबीर साहब का .....ये लोग बिचारे उब रहे हैं.....इनकी विचार क्षमता थोड़ी थक गयी है .....

गायक मंडली अरे साहब जो पद कहो वो सुना दें..... साहेब का पद तो जब कहो तब सुना दें.....

वि . एक      आप लोग अपनी मर्जी से ही सुनायें.....वो ही ठीक रहेगा

गायक मंडली तो लीजिए सुनिये

जन एक      कहते हैं महाराज कि एक बार कबीर साहब कई दिनों से घर से बाहर थे .    जब लौटे तो सांझ हो रही थी. लोई माई सिर पर पानी का घड़ा लिए उसे रखने जा रही थीं तभी कमाल ने आवाज लगायीं . 'मॉ देख दादा आ गये' . यह सुन लोई माई पलटी और घड़ा गिर कर फूट गया .    तभी कबीर साहब ने मुस्कुरा कर देखा और कहा.....फूटा कुंभ, जल जलहि समाया...

जन दो      कबीर साहब ने तो सारी बात एकदम मजे मजे से कह दी है

समूह गाता है    दरियाव की लहर दरियाव है जी हो ।

दरियाव और लहर में भिन्न कोयम ।।

उठे तो नीर है बैठे तो नीर हैं ।

कहो जो दूसरा किस तरह होयम ।।

जन तीन      महाराज आप लोग चुप क्यों हैं ? आप भी मजे मजे ले लेकर गाईये न .....

सब गाते है    उसी को फेर के नाम लहर धरा ।

लहर के कहे क्या नीर खोयम ।।

जक्त ही फर जब जक्त परब्रम्ह में ।

ज्ञान कर देख माल गोयम. ।।

वि. तीन      यहीं तो.... उस दिव्य अनुभूति में इन्द्रियाँ अपना काम करना भूल जाती हैं . उसमें जीव अपनी सत्ता खो देता हैं. मैं , मेरा और मुझे का खत्म हो जाना ही रहस्यवाद की आवश्यक शर्त हैं.

जन तीन      पर महाराज , उलटबासियों में तो रहस्यवाद भरा पड़ा हैं ।

वि दो      कैसी बातें कर रहे हैं आप . उलटबासियों के लिये तो कबीर को बार बार बदनाम किया जाता रहा है .इसलिये तो लोग कहते हैं कि कबीरदास की उल्टी बानी.... बरसे कम्बल भीजै पानी ।

जन एक      पर महाराज उलटबासियाँ सिर्फ कबीर साहब ने ही नहीं कही. नागपंथी योगियों और सहजयानियों ने भी उलटबासिया कही हैं . पर एक बात तो साफ है महाराज कि कबीर साहब की साधना उन योगियों और सहजयानियों से अलग हैं ।

जन दो      सूफियों के शब्दों की भी उन्होंने कुछ अलग ही व्याख्या की है ।

जन तीन      कबीर साहब उलटबासी कहें या सीधासादा पद कहें, उनकी बात तो समझ में आती हैं पर आपकी बात तो हमारे सिर के उपर से चली जाती है ।

जन चार      कबीर तो ईश्वर की अनुभूति को गुंगे का गुड़ कहते हैं ।

वि एक      हम भी तो यहीं कहते हैं कि वह असंप्रेष्य है, अनभिव्यजनीय है और अवर्णनीय हैं ।

जन पाँच      उनके लिये असीम और ससीम को कोई भेद न था . उनका ईश्वर इस्लाम के एकेश्वरवाद और हिन्दुओं के बहुदेववाद से परे था ।

जन छः      सच्चाई तो यह है कि उस दौर में निर्गुन भक्ति भी एक क्रान्तिकारी विचार था, फिर कबीर तो निर्गुन और सगुन दोनों को ही लांघ जाते हैं ।

जन आठ      मैया घाट पर जायेंगे, होली वहीं बनायेंगे .

जन सात      अमित अमित क्या हुआ ?

जन आठ      अरे तुम लोग यहाँ बैठे बैठे हो , और मैं तुम्हें सब जगह ढूँढ आया . चलो कबीर साहब ने तुम सब को बुलाया हैं . कल होली है न, नाच गाना होगा गंगा किनारे.. चलो .

सब जाते हैं . विद्वान विपरीत दिशा हेतु प्रस्थान करते हैं ।

सूत्रधार      क्यों श्रीमान आप नहीं जायेंगे गंगा किनारे , वहाँ पूरा इन्तज़ाम हैं ।

विद्वान 1      व्यवस्था है क्या... उत्तर में सूत्रधार सिर हिलाता हैं . साथियों से ... चलो भई पूरी व्यवस्था हैं

विद्वान वहाँ से उसी दिशा में जाते हैं जहाँ कोरस गया हैं ।

सूत्राधार

हमारे पूरे उत्तर भारत के बुद्धिजीवियों की यही दशा है . बगैर इसका सेवन किये इनकी कल्पना काम ही नहीं करती ..... हों तो मैं आपको बता रहा था कि कबीर को नई कारीगर 1जातियों के लिये एक नये ईश्वर की तलाश थी , एक नये दर्शन की . वो हर दर्शन के पास गये, हर धर्म के पास गये, हर पंथ के पास गये , लेकिन कुछ ही समय में उन्हें ही पंथ की , हर धर्म की , हर दर्शन की सीमा समझ में आ जाती और वे उसकी सीमा को लांघ जाते . उन्होने हर धर्म के विरोधाभासों की, उसकी विकृतियों की तीखी आलोचना की . उन्हें तो दरअसल मेहनतकश लोगों के लिये एक ऐसे दर्शन की तलाश में थी, जिसमें दुखः के साथ सुख भी हो , मानवता के साथ संवेदना हो , आपस में सदभाव हो , लोगों में एक दूसरे को समझने की समझ हो, जहाँ लोग विपत्ति से दूर न भागते हो और जहाँ पीड़ा को भी एक उत्सव की तरह मनाते हो . अब वो होली वाली बात ही ले लीजिये , बुरा न मानो होली हैं .

\*\*\*\*\* दृश्य चार \*\*\*\*\*

कबीर अपने साथियों के साथ मंच पर प्रवेश करते हैं । दूसरी तरफ से पालकी पर बैठा गुसाई अपने चेलों के साथ प्रवेश करता है .

गाना

ऐ जी हैं बलम परदेसवा, होली का संग खेलों ।  
ऋतु बसन्त अब आय गयी है, फलन लागे टेसुवो ।।  
कपड़ा रंगीले पहिरन लागे बिरहिन ढारे असुवा ।  
ऐ जी होरी का संग खेलों ।  
भरी गये ताल तलिया सागर बोलन लागे पेसुवा ।।  
उमड़ी नदिया नाव न बैडा कासे में पठनो संदेसवा ।  
जो रे गये सो बहुरि ना आये कैसन है वो देसवा ।  
काठ करो कुछ कहत न आये मोरे मन माहि अंदेसवा ।।  
बालापन तो नबहि गयो हैं अब लिबहे धो केसवा ।  
कहहि कबीर सुनो भाई साधो गहु सतगुरु उपदेसवा ।।  
कबीर गुसाई की तरफ देखकार कहता है .

कबीर

फूटि आँख विवेक की , लखे न संत असंत

जाके संग दस बीस हैं, ताका नाम महन्त

गाना ऐ जी हैं बलम परदेशवा, होली का संग खेलों ।

ऋतु बसन्त अब आय गयी है, फलन लागे टेसुवो ।।

कपड़ा रंगीले पहिरन लागे बिरहिन ढारे असुवा ।

ऐ जी होरी का संग खेलों ।

**गुसाई के चेले मारने दौड़ते हैं . और उनमें से एक पत्थर कबीर को मारता है ।**

चेला ले जा बाको और समझा दर्इयों आगे से इधर न आ जायें , वरना बहुत पिटेगो . नीच, कमीन, जुलाहा . ....गुरु जी हमने मार दओं बा को पथरा .

गुसाई अच्छा मारो बेटा पत्थरा . एक और लगे हन के , वहीं रह जायें तन के . ई नीच ने तो सबरो धरम नष्ट कर दओं . अब तो गंगा चल कर कर ही सपरे , सारा मजा ही बिगाड़ दिया इस नीच ने . **चेले उन्हें उठाते हैं .**

चेले गुसाई महाराज की जय .

कबीर फूटि आँख विवेक की , लखे न संत असंत

जाके संग दस बीस हैं, ताका नाम महन्त

गाना ऐ जी हैं बलम परदेशवा, होली का संग खेलों ।

ऋतु बसन्त अब आय गयी है, फलन लागे टेसुवो ।।

कपड़ा रंगीले पहिरन लागे बिरहिन ढारे असुवा ।

ऐ जी होरी का संग खेलों ।

**गाना गाता और नृत्य करता हुआ समूह मंच से प्रस्थान करता हैं . सूत्रधार का नृत्य करते हुए प्रवेश .**

सूत्रधार 1 ऐ जी होरी का संग खेलों . बुरा न मानो होली है . .... कबीर तो थे ही मुहँफट.... खरी कहते थे और ताल ठोक कर कहते हैं . और कहते भी थे सबके सामने . इसी से काशी में उनका विरोध कम न था . अब जो ताल ठोक कर कहेगा उसका विरोध भी होगा और मार भी खायेगा . पर कबीर डर कर रहने वाले व्यक्ति नहीं थे . एक बार की बात हैं नाथ जोगियों का एक दल काशी आया . आसपास के सारे लोग उनके सेवा सत्कार में जुट गये . कबीर ने एक क्षण को देखा , फिर मुस्कराये और बोले

समूह समूह प्रवेश करता है ....

मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपरा ।

आसन मारि मंदिर में बैठे ॥

नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ।

कनवा फड़ाये जोगी जटवा बढौले ॥

दाढ़ी बढ़ाये जोगी हूवै गैले बकरा ।

सूत्रधार      जोगी चिल्लाये , बन्द करो ये बकवास वरना तुम्हारी बस्ती भस्म कर देंगे . नाथ जोगियों की यह बात देखते ही देखते पूरे काशी में फैल गई . पर कबीर के निशाने पर तो पंडित भी थे और मुल्ला भी . एक दिन मौलाना से भी पूछ लिया कि , जो खोदाय मस्जिद में बसतु है और मुलुक कहि केरा .....मतलब तुम्हारा खुदा अगर मस्जिद में बसता हैं तो बाहर की रखवाली कौन करता हैं . ....अब चले जरा दशाश्वमेध घाट पर भी देख लिया जावें कि कबीर से किलपने वाले क्या क्या कर रहे हैं ...

..... दृश्य      पाँच      .....

घाट पर पण्डित लोग बैठे हैं, कुछ नहा रहे हैं

- पंडित एक: हम नहा कर चले तो कहना लगा ..... इस नहाने धोने से क्या लाभ , जो मन का ही मैल नहीं जाये .... पानी में मछली तो सदा ही पड़ी रहती है , पर धोने से क्या बास जाती है
- पंडित दो: मिश्र जी यह कबीर तो बहुत ही उददंड है . मैं ने तों काशी छोड़ने का निश्चय कर लिया है . बोलता है पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भया न कोय , ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय . मैं ने घूर कर देखा , तो बोला , पंडित और मसालची दोनों सूझे नाहिं .
- पंडित तीन उस उददंड की हिम्मत तो देखिए .... राधेशरण जी के साथ मैं भी था . मैं ने कहा भी , जुलाहे संभल जा ...इस तरह की बात अच्छी नहीं . तो बोलने लगा.....अपनी अपनी कहत है काको धरिए ध्यान ....अब तो काशी में रहने का धरम ही नहीं रहा. ब्राम्हणों को जुलाहे फटकारने लगेंगे तो लोग क्या कहेंगे ?
- पंडित चार सारे क्षूद्र तो उसी की जय जय कार कर रहे हैं . मुझे एक क्षूद्र छू गया . मैं ने खड़ाउ उतार कर मारी तो मुझी से उलझने लगा .

पंडित एक शिवशम्भो.... शिव शम्भो.....अनर्थ हो रहा है . ब्राम्हणों जागो . अरे नहाते ही रहोगे क्या ? उधर सबरा धर्म नष्ट होता जा रहा है ....ओ भईयों क्या पोथी ही पलटते रहोगे .... धर्म के लिए उठो . उधर यवनों ने तो नाश कर ही रखा है और ये नीच तो वेद का ही टाट उलट देने पर आमादा हैं ...चलों

पंडित दो: अब तो कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा .... पानी सिर से उँचा हो गया है .

### सारे पंडितों का प्रस्थान . सूत्रधार के साथ समूह का प्रवेश

जन 1 अरे सूत्रधार जी , आपके पंडित महाराज तो गये . अब आप हमें क्या समझा रहे थे , वो समझाईयें .

सूत्रधार एक पंडितों की भाषा में ?

जन 1 अरे नहीं महाराज, अपनी भाषा में .

सूत्रधार 1 कबीर के कई रूप हैं . उन्होंने सहजयानियों और नाथ पंथियों का विरोध ही नहीं किया उनसे कुछ लिया भी . उनमें एक अक्खड़पन है . घर फूक मस्ती है . फटकार कर सच कहने का साहस है और एक फक्कड़ाना ठाठ है . तभी तो कहा है :

समूह: हम घर जारा अपना, लिया मुराड़ा हाथ  
अब घर जारो तासु का, जो चले हमारे साथ .

जन एक: इसी लिए तो विद्वत समाज उनसे इतने साल तक आँख चुराता रहा . पर सच से कब तक आँख चुराई जा सकती है कबीर की आवाज तो सिर चढ़ कर बोलती है .

जन दो: लेकिन मुझे तो लगता है कि कबीर सिर्फ प्रेम के कवि थे . जीवन के दुख को कहने वाले कवि . उनका दुख उन्हें बुद्ध से जोड़ता है . नवीं या दसवीं शताब्दी में कहा जाता है कि , नेपाल की तराई में शैवों और बौद्धों के मेल मिलाप से एक नया सम्प्रदाय पैदा हो गया था , नाथ पंथी योगियों का सम्प्रदाय . कबीर पर इन नाथपंथी योगियों का गहरा असर दिखता है . हालांकि वो नाथ पंथियों को फटकार लगाने में भी कोई कोरकसर नहीं छोड़ते . दूसरी ओर अद्वैतवाद का भी असर उन पर है..... शंकराचार्य के लिए तो कहा ही जाता है कि वो एक प्रच्छन्न बौद्ध थे...

जन चार: तुम तो एकदम पंडितों की तरह बातें कर रहे हो . क्या कबीर के अपने जीवन का और अपने आसपास के लोगों के जीवन का साक्षात् दुख ही कम था.....

जन पांच: देखने की बात यह है कि दुख ने उन्हें कभी कातर नहीं बनाया ....उनमें दैन्य नहीं है . ..रिरियाहट नहीं है....

जन चार दुख ने उन्हें फक्कड़ और फटकार कर सच कहने वाला बनाया .

जन पांच जिसके पास खोने को कुछ न हो . जो अपना घर जार कर आया हो , उसे फिर सच सच और खरी खरी कहने से कौन रोक सकता है

जन दो इसलिए तो पाखण्ड किसी का हो कबीर की टेढ़ी आँख से नहीं बचता . मुल्ला हो . पंडित हो जोगी हो भोगी हो , वो सबकी खबर लेते हैं .

जन तीन उन्हें तो अपने साधारण लोगों को जगाना थो . उनके बीच फैली भ्रांतियों को मिटाना था इसलिए रूढ़ियों पर.....पाखण्ड पर चोट करना जरूरी था .

जन दो साहब ने कहा है न.....**समूह का प्रस्थान एवं जोगन का प्रवेश**

समूह गाता है साधकों खेल तो बिकट बेंड़ा मती ।

सती और सूर की चाल आगे ।।

सूर घमासान है पलक दो चार का ।

सती घमासान पल एक लागै ।।

साध संग्राम है रैन दिन जूझना ।

देह परजन्त का काम भाई ।।

### **जोगन का प्रस्थान एवं सूत्रधारों का प्रवेश**

सूत्रधार एक देखियो और सज्जनों, सत्य की खोज करने वाले का संघर्ष बहुत कठिन है . सती और सूरमा के बनिस्बत वचन निभाना ज्यादा कठिन है ..... सूरमा की लड़ाई तो दो चार पल की है और सती का संघर्ष भी एक पल में खत्म हो जाता है ... लेकिन सत्य को खोजने वाले का सच की जो लड़ाई कबीर ने की थी , वो आज कहाँ पहुँची ?

सूत्रधार दो वो जिसने अनहद को अपने सुहंग तूरा से गुंजा दिया, हमने उसके उस बेहद के मैदान को हदों में बहुत छोटी छोटी हदों में बांट दिया... उस कबीर की बानी का हमने क्या किया, जिसमें सूरज चोंद और तारों के चिराग जल रहे हैं . जिसमें शून्य गगन में दिन रात नौबत बज रही है . तबल और निशान बज रहे हैं . जिसमें रहस्यमयी ज्योति की झालर जगमगा रही है . सारा आकाश संगीत से भरा है . उस कबीर का हमने क्या किया, जिसने ज्ञान की थाली में प्रेम का दिया जलाया था ? जिसने कहा था

**दोनों सूत्रधार मंच के कोने में जाते हैं और नेपथ्य से आवाज आती हैं ।**

हिन्दू कहो तो मैं नहीं , मुसलमान भी नाहिं ।



पाँच तत्त का पूतला , गैबा खेलै मॉहि ।।

नेपथ्य से अचानक शोर होता है . कुछ व्यक्ति चारों ओर से लाठी चलाते हुए आते हैं और दूसरी तरफ से निकल जाते हैं . चीखने चिल्लाने की मारो मारो की आवाजें आती हैं .

सूत्रधार एक वहाँ क्या हो रहा है

**समूह के लोग दायें बायें और पीछे झाँक कर देखते हैं**

जन एक शहर में दंगा हो गया है .

जन दो वहाँ लोग दुकानें लूट रहे हैं.....अरे अरे उस बाजार में आग लगाई जा रही है .

जन तीन अरे इन दंगाइयों ने तो एक आदमी को टायर पहना कर जिन्दा जला दिया .....

जन चार लोग भाग रहे हैं .... अरे देखो वो छोटा सा बच्चा.... भीड़ के पांवों में आकर कुचल गया है ...

जन दो लगता है जैसे शताब्दियों की नींद से जागकर बर्बर वापस आ गये हैं .....

**मंच पर से एक स्त्री भागती हुई दिखाई देती हैं .**

जन तीन वो स्त्रियों की असमत.....समूह मंच पर से भाग जाता है .

सूत्रधार दो तुम पूछ रहे थे न कि हमने कबीर की सच की लड़ाई का क्या किया ? जिस कबीर ने अर्थ के शरीर से शब्द के कपड़े हटा दिये , उसकी शब्द साधना का क्या किया ? जिसने बार बार राम रहीम को एक कर दिखाया, हमने उस राम रहीम का क्या किया ?

सूत्रधार एक हमने उसकी जतन से ओढ़ी और ज्यों की त्यों धरी चुनरी को तार तार कर दिया .... हमने उसके सारे ताने बाने बिखरा दिये .

**समूह का प्रवेश .**

गाना एक निरंजन अलह मेरा , हिन्दू तुरक दुहू नहीं मेंरा ।

राखूं बरत ना महरम जाना , तिसहि सुमिरूं जो रहे निदाना ।।

पूजा करूं ना निमाज गुजारूं , इस निराकार हिरदे नमस्कारूं ।

ना हज जाउं ना तीरथ पूजा , एक पिछाण्या तो का दूजा ।।

कहै कबीर भरम सब भागा , एक निरंजन सूं मन लागा ।।

**समूह का प्रस्थान ।**

\*\*\*\*\* दृश्य छः \*\*\*\*\*

सूत्रधार एक कबीर साहब के जन्म को लेकर कई किस्से हैं . तिथियों और वर्ष को लेकर भी कई विवाद हैं .....

उनके जन्म को लेकर कई किंवदंतियां मशहूर हैं .. उस दोहे को प्रमाण माने जो कबीर चरित्र बोध में दिया है तो उसमें कहा गया है

सूत्रधार 2 चौदह सौ पचपन साल गये, , चंद्रवार इक ठाठ ठये ।

जेठ सुदी बरसायत कों , पूरनमासी तिथि प्रकट भए ।।

धन गरजे दामिनि दमकें , बूंदें बरसे झर लाग गए ।

लहर तालाब में कमल खिले , जेह कबीर भानु प्रकट भए ।।

मतलब यह कि 1455 में ज्येष्ठ पूर्णमासी को जिसे चंद्रवार भी कहा जाता है कबीर साहब प्रकट हुए . आइने अकबरी और भक्तमाल में भी कबीर साहब का उल्लेख मिलता है . जनश्रुतियों में इसका हवाला मिलता है कि वो सिकन्दर लोदी के शासन काल के समय थे और लोदी काशी में 1494 में आया था .

सूत्रधार 1 विवाद सिर्फ इस बात का नहीं है कि कबीर कब पैदा हुए , विवाद तो इस बात पर भी है कि वो पैदा कैसे हुए . कुछ लोग उन्हें अवतार मानते हैं और कहते हैं कि वो एक दैवी प्रकाश से पैदा हुए थे और लहरतारा तालाब में एक कमल पर तैरते हुए पाये गये थे . कुछ उन्हें एक विधवा ब्राम्हणी का पुत्र मानते हैं . उनके जन्म की एक कथा यह भी है .....

एक ओर अपने चेलों के साथ रामानन्द जी का प्रवेश . वृद्ध ब्राम्हण और एक लड़की का प्रवेश जो सफेद साड़ी पहने है . वृद्ध रामानन्द जी को प्रणाम करने का बढ़ता है चेला रोक कर

चेला ए.....कहाँ बढ़ा आ रहा है . कौन है तू ?

वृद्ध ब्राम्हण हूँ महाराज..... रामानन्द आशीर्वाद में हाथ उठाते हैं . पुत्री प्रणाम करती है

रामानन्द पुत्रवती भव .... लड़की डर कर पीछे हटती है

वृद्ध यह क्या कह दिया महाराज . मेरी बेटी तो विधवा है .....इस आशीर्वाद को लौटा लें महाराज .

रामानन्द आशीर्वाद लौटाए नहीं जाते और .....

- चेला रामानन्द महाराज का वचन खाली नहीं जाता . **सबका प्रस्थान**
- जन एक कहा जाता है कि इसी ब्राम्हणी के गर्भ से एक दिन कबीर पैदा हुए . बदनामी के डर से उस माँ ने उन्हें एक तालाब के किनारे छोड़ दिया ....यहीं एक जुलाहा दम्पति ने उन्हें पाया था . नीरू और नीमा नाम था उनका.
- जन दो एक कहानी में तो यह भी बताया है कि, लोदी के सिपाहियों और कबीर के बीच के बीच झगड़ा हुआ, तो उसमें कबीर को पालने वाली नीमा माँ घायल हो गयीं और उसने मरने से पहले कबीर को बताया, कि वो एक अनाथ बच्चा था, जो उन्हें एक दिन रास्ते में मिला था .
- जन तीन हो सकता है इसी लिए कबीर ने कहा हो .....
- कबीर माई बिड़ानी बाप बिड़ हंम भी मंझि बिड़ां ।
- दरिया केरी नावं ज्यूं संजोगे मिलियां ।।
- मतलब माँ भी बिरानी थी ....बाप भी बिराना और हम भी बिराने हैं . जैसे नदी में नौकाएं आकर मिल जाती हैं, उसी तरह हम भी संजोग से ही आ मिले हैं ....
- जन पांच यह सब गढ़ी गढ़ाई कहानियाँ हैं. उंची जात वालों के चोंचले हैं ....एक महान आदमी पैदा हो गया किसी छोटी जात में, तो ये उच्च जाति के लोग कैसे बर्दाश्त करें ....तो ऐसी कहानियों गढ़ ली कि तो जन्म से तो उँची ही जात का था ....यह सब बकवास है . वो जुलाहे के ही पुत्र थे और जुलाहे ही थे . कबीर ने साफ साफ कहा है
- जन तीन क्या कहा है
- समूह गाता है कबीर दुनियां भांड़ा दुख का भरी मुहां मुँह भूख ।
- अदया अलह राम की , करहैं उंणीं कूख ।।
- जन पांच मतलब साफ है, यह दुनियां दुखों का घड़ा है . जिसमें मुंह तक भूख भरी है . यह अल्लाह राम की दया ही है कि, उस पर भी मैं एक कुलक्ष्य और हीन कुल में पैदा हुआ .
- सूत्रधार एक खैर इस तरह के विवादों का तो कोई अन्त नहीं .... कबीर साहब ने न तो अपने को कभी हिन्दू माना न मुसलमान ...वो जात पात से उपर थे . इस तरह के किसी ढोंग में उनका विश्वास नहीं था .
- जन एक कबीर साहब को लेकर तरह तरह की किंवदन्तियाँ मशहूर हैं . लगता है कुछ तो उनके पदों में आये बिम्बों को लेकर बना ली गयीं है . कुछ उस दौर में जनता पर

होने वाले अत्याचारों और जनता के मन में उठने वाले गुस्से से पैदा हुई होंगी ....  
गुस्से के कई रूपक बनते हैं ...

जन तीन      कहा जाता है कि कबीर साहब की उम्र 120 साल थी . अब कबीर साहब की  
काया की उम्र 120 साल रही हो या उससे कम लेकिन यह तो अब एकदम साफ है  
कि कबीर की उम्र.....संत कबीर की उम्र...छह सौ साल हो चुकी है और अभी वह  
कई सदियों को लांघती चली जायेगी....

जन दो      कबीर साहब एक विद्रोही कवि थे यह विद्रोही स्वभाव उन्होंने अन्त समय भी नहीं  
छोड़ा तो बनारस में पैदा हुए थे , पर मृत्यु के समय मगहर चले आये थे

समूह      सकल जनम शिवपुरी गंवाया  
मरती बेर मगहर उठ आया

जन दो      मरते समय वो यह कहते हुए बनारस से चल दिये कि.....  
क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मेरा

विद्वान      अरे अरे, हम आ गये

समूह      तो हम चले समूह जाता हैं ।

विद्वान      तो अब हमें कौन सुनेगा ?

सूत्रधार      हम है न ।

विद्वान      क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मेरा ।  
काशी तन तजै कबीरा, रामे कौन निहोरा ।।

सूत्रधार 1      वाह क्या बात कहीं है . अगर काशी में तन तज कर मुक्ति पाऊँ तो, राम का कौन  
सा एहसान होगा ?.....तो ऐसे थे हमारे कबीर साहब . अक्खड़, फक्कड़ और  
क्रांतिकारी . कबीर तो ज्ञान के हाथी पर चढ़े थे, पर सहज का दुलीचा डाले बिना  
भक्ति के मंदिर में प्रविष्ट हुए . बाह्याचार का खण्डन किया था , पर सिर्फ आक्रमण  
की मंशा से नहीं , ईश्वर के बिरह में तपे थे , पर आँख में आँसू भर कर नहीं राम  
को आग्रहपूर्वक पुकारा था. सर्वत्र उन्होंने एक समता को बनाये रखा . सामाजिक  
ऊँच नीच को , और उनके समर्थकों को उन्होंने कभी क्षमा नहीं किया . भगवान के  
नाम पर पाखंड करने वालों को उन्होंने कभी छूट नहीं दी . दूसरों को गुमराह करने  
वालों को उन्होंने कभी नहीं बख्शा . ऐसे प्रसंगों में वे उग्र थे . कठोर और  
आक्रामक थे . व्यंग्य उनकी बात का सबसे बड़ा हथियार था .

### विद्वानों का गाते हुए प्रवेश

विद्वान इसी घट में चोंद झलकता है . लेकिन अंधी आँखों को दिखाई नहीं देता । इसी घट में चोंद हैं और इसी घट में सूरज और इसी घट में अनहद तर सुनाई देता हैं . इसी घट में ढोल और डंके बज रहे हैं , लेकिन बहरे कानों को कुछ सुनाई देता . जब तक आदमी मेरी , मेरी करता रहता है , तब तक कोई काम नहीं बनता . जब यह अहंकार मिट जाता है , तब भगवान स्वयं आकर हर काम को संवार देते हैं . कर्म का उद्देश्य केवल ज्ञान है, लेकिन ज्ञान के आते ही कर्म बेकार हो जाता है , जैसे फूल फल पैदा करने के लिये खिलता है , लेकिन यहीं फल लगने के बाद मुरझा जाता है . कस्तूरी हिरन की नाभि में होती है , लेकिन वह उसे अपने शरीर के बजाय घास में खोजता फिरता है .

गाना चंदा झलके यहि घट माहीं , अंधी आँखन सूझै नाहीं ।  
यही घट चंदा यहि घट सूर , यहि घट गाजै अनहद तूर ॥  
यही घट बाजै तबल निसान , बहिरा सबद सुनै नहि कान ।  
जब लग मेरी मेरी करे , तब लग काजे एकौ नहि सरे ॥  
जब मेरी ममता मर जाय , तब लग प्रभु काज संवारे आय ।  
ज्ञान के कारन करम कमाय , होय ज्ञान तब करम नसाय ॥  
फल कारन फूले बनराय , फल लागे पर फूल सुखाय ।  
मृगा पास कस्तूरी बास , आप न खोजे खौजे घास ।

सुल्तान का प्रवेश . सिपाही सुल्तान के सामने कबीर को लाते हैं , उसके पीछे पूरी जनता खड़ी हैं ।

सुल्तान दरबार में आने में इतनी देर क्यों लगाई ?  
कबीर मैंने एक ऐसा नज़ारा देखा कि थम गया ।  
सुल्तान ऐसा कौन सा नज़ारा था कि जिसने तुझे हुक्मउदुली करने को मजबूर कर दिया ?  
कबीर सुल्तान , मैंने सुई की छेद से एक पूरे कारवों को गुजरते देखा  
सुल्तान तुम झूठे हो .... मक्कार हो .... इस उलटबॉसी का क्या मतलब ?  
कबीर यह तो अपनी अपनी समझ का फेर है , सुल्तान . स्वर्ग और नरक में कितना अन्तर हैं ? सूरज और चोंद के बीच इस अन्तरिक्ष में अनगिनत उँट और हाथी समा सकते हैं

. पर सब एक आँख की पुतली की नोक से देखे जा सकते हैं ..... जो सुई की छेद से भी छोटी हैं ।

सुल्तान खामोश... जुलाहे, क्या यह सच है कि तूने रियाया को भड़काया है ?

कबीर यह गलत हैं ।

काजी हुजूर मुझे इजाजत दे तो मैं कुछ अर्ज करूँ

सुल्तान कहो

काजी हुजूर यह जुलाहा लोगों से कहता है कि नमाज़ी झूठे हैं ।

कबीर मुझसे जलने वाले हिन्दू कहते हैं , कि मैं नीच हूँ , और मुसलमानों का दोस्त हूँ . तुम कहते हो कि मैं मुसलमानों का दुश्मन हूँ . सुनों में तुम्हारी तेग से नहीं डरता ।

सुल्तान जुलाहे

कबीर तू मुझे रोक सकता है सुल्तान . अगर ब्राह्मणों, जोगियों, शाक्तों, बौद्धों और कापालिकों का बस चलता तो वे भी मुझे कभी का मार चुके होते . इन्होंने ही मुझे बचाया है . मेरी सच्ची आत्मा ने मुझे बचाया है . हम गरीब थे , गरीब हैं और आज भी गरीब हैं . जैसे हिन्दू राजा अत्याचारी थे, वैसे ही तुम भी हो . तुम इन्सान को इन्सान नहीं रहना देना चाहते ।

समूह कबीर साहब की जय हो

सुल्तान खामोश

काजी सुल्तान यह बागी हैं ..... ऐ जुलाहे तू जानता है इसका नतीजा

कबीर कौन सा नतीजा है जिससे डरकर मैं झूठ बोलूँ ?

कमाल तू गरीबों की आन हैं ।

सुल्तान कौन हैं ये ?

काजी हुजूर इस का लड़का है ।

कमाल मार डाल.....डराता किसे हैं . अरे बड़े बड़े हुक्मरान इस धूल में मिल गये पर गरीब , मेहनत और ईमान की रोटी खाने वाला कभी नहीं मरता ।

समूह कबीर साहब की जय

सुल्तान जुलाहे तेरी मौत तेरे सिर पर मंडरा रही है

कबीर सुल्तान, पलट कर देख . कोई इस धरती को ले जा सका है ? यह तेरा झूठा गुरुर है जो तेरे मुँह से बोल रहा है . तू मुझे डराता है.... मेरा मैं तो कब का छूट गया, जब डरने वाला ही नहीं रहा तो डर कैसा?

समूह कबीर साहब की जय

कमाल सुल्तान, मेरी अम्माँ कहती है कि तेरा पाप ही तुझे डरा रहा है . देख बाबा किस शान से तेरे सामने खड़े हैं. सत्य की आग ने उसे सोना बना दिया है और तू.... सोने के सिंहासन पर बैठकर भी मिटटी का लौंदा बना हुआ है .

समूह कबीर साहब की जय

सुल्तान कुचल डालो इन सबके सिर

सब का प्रस्थान . समूह गाते हुऐ प्रवेश करता है ।

गाना सन्तो जागत नीन्द न कीजै, जागत नीन्द न कीजै ।  
 काल न खाये , कल्प नहीं व्यापे, देह जरा नहिं छीजै ।।  
 बिन चरनन को दस दिसि धावै , बिन लोचन जग सूझै ।  
 ससा सो उलटि सिंह को ग्रासे , ई अचरज कोउ बेझै ।।  
 पैठि गुफा में सब पग देखै , बाहर कछुक न सूझे ।  
 उलटा बान परिधि लागे, सूरा होय सो बूझै ।।  
 बिना पियाला अमृत अचवे , नदी नीर भरि राखे ।  
 कहै कबीर सो जुग जुग जीवै , राम सुधा रस चाखै ।।

समूह जाता है . सूत्रधार का प्रवेश

सूत्रधार 1 किस्सा तो किस्सा है . तो किस्सा यह है कि बाहर सिपाहियों और कबीर के साथ आये गाँव के लोगों में जम कर लड़ाई हुई . सुल्तान ने जब देखा कि जनता उसके खिलाफ होती जा रही है तो वो वहाँ से भाग गया . सिपाहियों को लोगों ने मार मार कर भगा दिया . लेकिन इस हादसे में लोई माई बुरी तरह जख्मी हो गई , और उसने थोड़ी देर बाद ही कबीर की गोद में दम तोड़ दिया ।

\*\*\*\*\*' दृश्य आठ \*\*\*\*\*

कमाल और कबीर का प्रवेश

सूत्रधार 2 सूत्रधार जी आप निराश न हो , देखियें कबीरदास जी भी आ गये । कहो कबीरदास जी आगे क्या हुआ ?

कबीर बस करो यार , मुझे अब गणेश ही रहने दो .... हममें थोड़ा थोड़ा कबीर जरूर हैं , पर पूरा कबीर बनने की न तो हममे हिम्मत है और न ही हमारी औकात . कहों वो कबीर और कहों हम .

सूत्रधार एक लेकिन अभी कुछ देर तो

कबीर नहीं . मेरी बात मानो तो इस कमाल को अब कबीर बना दो . हो सकता है कि इस पर से इसी तरह कमाल का भ्रम उतर जाये . देखों कैसा उदास हैं , जैसे सचमुच कोई इसी की माँ हो और जैसे यह घटना अभी घटी हो .

### समूह का प्रवेश

गाना गगन की ओट निसाना है , गगन की ओट निसाना है

दाहिने सूर चन्द्रमा बाँये , तिनके बीच छिपाना है

गणेश लोग कबीर साहब की बात का मर्म कब समझेंगे ? यह सारी दुनियाँ तो अन्धी हैं . कबीर साहब किस किस को समझाते . एक दो होते तो उन्हें समझा भी देते , पर यहाँ तो सभी पेट के धन्धे में भटक रहे हैं . पानी के घोड़े पर हवा का सवार ऐसे टपक जाता है जैसे ओस की बून्द सत्य की अथाह नदी बह रही हैं और खैवन हारा उसके बीच फँसा हुआ है . अन्धा घर की चीज़ के पास नहीं जाता और दिया जला कर इधर उधर ढूँढता फिरता है . आग लगी और सब कुछ जल गया और बन्दा बिना गुरु के ज्ञान के भटक रहा है .

समूह तन की कमान सुरत का रोंदा , सबद बान ले ताना है

मारत बान बेधा तन ही तन , सतगुरु का परवाना है .

मारयों बान घाव नहीं तन में , जिन लागा तिन जाना हैं .

कहै कबीर सुनो भई साधों, जिन जाना तिन माना हैं .

गणेश कबीर साहब तो सब की बात करते हैं , लेकिन उन्हें कोई नहीं जानता . सबद को कोई जानता ही नहीं . जिससे भी उसके हित की बात कहो वो ही बैरी हो जाता है . कागज स्याही उन्होंने कभी छुआ नहीं और कलम को कभी हाथ नहीं लगाया . चार युगो का महत्व उन्होंने अपने मुख से ही बखाना है . उनकी बोली पूरब की बोली है , उसका महत्व वो ही जानेगा जो पूरब का होगा .

गगन की ओट निसाना है , गगन की ओट निसाना है



दाहिने सूर चन्द्रमा बॉये , तिनके बीच छिपाना है  
सारे पात्र मंच पर सामने आते हैं और नमस्कार करते हैं . फिर धीरे धीरे मंच का  
चक्कर लगाते हुऐ निकलते हैं . नेपथ्य से गाने की आवाज आती हैं ।  
चला हँसा वा देस जहँ पिया बसै चित्तचोर  
सुरत सोहागिन है पनिहारिन , भरे ठाढ़ बिन डोर  
धीरे धीरे गाने के साथ साथ प्रकाश भी कम होता जाता है ।

समाप्त

गाना            हमारे राम रहीम करीमा केसो, अलह राम सति सोई ।  
बिसमिल मेटि बिसम्मर एकै, और न दूजा कोई ॥  
तुरुक मसीती देहूरे हिन्दू, दुहूँठा राम दिखायी, ।  
जहाँ मसीही देहुरा नाहि तहाँ काकी ठकुरायी ॥  
कहे कबीरा दास फकीरा अपनी राह चलि भाई ।  
हिन्दू तुरक का करता एकै ता गति लखी न जाई ॥

गाना            सुगवा पिंजरवा छोरि भागा .  
इस पिंजरे में दस दरवाजा ॥  
दस दरवाजा किवरवा लागा .  
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यों ।  
अब कस नाहि तू बोलत अभागा ॥  
कहत कबीर सुनो भाई साधौ ॥  
उड़ियो हँस टूटि गयो तागा ।  
सुगवा पिंजरवा छोरि भागा ॥

समूह गाता है    मौको कहाँ ढूँढे रे बन्दे , मैं तो तेरे पास में ।  
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में ॥

ना तो काउन क्रिया करम में, नाही जोग बैराग में .  
ना मैं छगरी ना मैं भेंडी, ना मैं छुरी गड़ास में ॥  
नहिं खाल में नहि पूछ में, ना हडडी में मांस में ।  
मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास में ॥  
खोजी होय तो तूरतैं मिलिहौं, पल भर की तलास में .  
कहैं कबीर सुनो भाई साधो सब सॉसन की सांस में ॥

कबीर      एक अचंभा देखा रे भाई , ठोंड़ा सिंह चरावे गाई ।  
पहिले पूत पीछे भई माई , चेला के गुरु लागै पाई ॥  
जल की मछली तरिवर ब्याई , पकड़ि बिलाई मुरगै खाई ।  
तलिकार साखा उपरि करि मूल , बहुत भौंति जड़ लागै फूल ॥  
कहैं कबीर या पद को बूझैं , ताकौ तीन्यो त्रिभुवन सूझैं ॥

समूह गाता है    अब न बसूं इहि गांइ गुसाई , तेरे नेवगी खरे सयाने हो राम ।  
नगर एक तहां जीवधर महता, बसे जु पंच किसानां ॥  
नैनूं नकट सवनूं रसनूं, इन्द्री कहया ना माने हो राम ।  
धरमराई जब लेखा मांग्या, बाकी निकसी भारी ॥  
पांच किसानो भाजि गये हैं, जीवधर बांध्यो पारी हो राम ।  
कहैं कबीर सुनोहु ने संतों, हरि भजि बौधों भेरा ॥  
अबकी बेर बकसि बंदें कों, सब खेत करो नबेरा हो राम ।

समूह गाता है    दरियाव की लहर दरियाव है जी हो ।  
दरियाव और लहर में भिन्न कोयम ॥  
उठे तो नीर है बैठे तो नीर हैं ।  
कहो जो दूसरा किस तरह होयम ॥  
उसी को फेर के नाम लहर धरा ।

लहर के कहे क्या नीर खोयम ।।

जक्त ही फर जब जक्त परब्रम्ह में ।

ज्ञान कर देख माल गोयम. ।।

गाना            ऐ जी हैं बलम परदेसवा, होली का संग खेलों ।  
                 ऋतु बसन्त अब आय गयी है, फलन लागे टेसुवो ।।  
                 कपड़ा रंगीले पहिरन लागे बिरहिन ढारे असुवा ।  
                 ऐ जी होरी का संग खेलों ।  
                 भरी गये ताल तलिया सागर बोलन लागे पेसुवा ।।  
                 उमडी नदिया नाव न बैडा कासे में पठनो संदेसवा ।  
                 जो रे गये सो बहुरि ना आये कैसन है वो देसवा ।  
                 काठ करो कुछ कहत न आये मोरे मन माहि अंदेसवा ।।  
                 बालापन तो नबहि गयो हैं अब लिबहे धो केसवा ।  
                 कहहि कबीर सुनो भाई साधो गहु सतगुरु उपदेसवा ।।

समूह            मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपरा ।  
                 आसन मारि मंदिर में बैठे ।।  
                 नाम छाड़ि पूजन लागे पथरा ।  
                 कनवा फड़ाय जोगी जटवा बढौले ।।  
                 दाढ़ी बढ़ाये जोगी हूवै गैले बकरा ।

समूह:            हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ  
                 अब घर जारो तासु का, जो चले हमारे साथ .

समूह गाता है    साधकों खेल तो बिकट बेंड़ा मती ।  
                 सती और सूर की चाल आगे ।।

सूर घमासान है पलक दो चार का ।

सती घमासान पल एक लागै ॥

साध संग्राम है रैन दिन जूझना ।

देह परजन्त का काम भाई ॥

हिन्दू कहो तो मैं नहीं , मुसलमान भी नाहिं ।

पाँच तत्त का पूतला , गैबा खेलै मॉहि ॥

गाना      एक निरंजन अलह मेरा , हिन्दू तुरक दुहू नहीं मेरा ।  
राखूं बरत ना महरम जाना , तिसहि सुमिरूँ जो रहे निदाना ॥  
पूजा करूँ ना निमाज़ गुजारूँ , इस निराकार हिरदे नमस्कारूँ ।  
ना हज जाउं ना तीरथ पूजा , एक पिछाण्या तो का दूजा ॥  
कहै कबीर भरम सब भागा , एक निरंजन सूं मन लागा ॥

कबीर मांई बिड़ानी बाप बिड़ हमं भी मंझि बिड़ां ।

दरिया केरी नावं ज्यूं संजोगे मिलियां ॥

समूह गाता है    कबीर दुनियां भांड़ा दुख का भरी मुहां मुँह भूख ।

अदया अलह राम की , करहैं उंणीं कूख ॥

सकल जनम शिवपुरी गंवाया

मरती बेर मगहर उठ आया

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मेरा

काशी तन तजै कबीरा, रामे कौन निहोरा ॥

गाना      चंदा झलके यहि घट माहीं , अंधी आँखन सूझै नाहीं ।

यही घट चंदा यहि घट सूर , यहि घट गाजै अनहद तूर ॥  
यही घट बाजै तबल निसान , बहिरा सबद सुनै नहि कान ।  
जब लग मेरी मेरी करे , तब लग काजे एकौ नहि सरे ॥  
जब मेरी ममता मर जाय , तब लग प्रभु काज संवारे आय ।  
ज्ञान के कारन करम कमाय , होय ज्ञान तब करम नसाय ॥  
फल कारन फूले बनराय , फल लागे पर फूल सुखाय ।  
मृगा पास कस्तूरी बास , आप न खोजे खौजे घास ।

गाना सन्तो जागत नीन्द न कीजै, जागत नीन्द न कीजै ।  
काल न खाये , कल्प नहीं व्यापे, देह जरा नहीं छीजै ॥  
बिन चरनन को दस दिसि धावै , बिन लोचन जग सूझै ।  
ससा सो उलटि सिंह को ग्रासे , ई अचरज कोउ बेझै ॥  
पैठि गुफा में सब पग देखे , बाहर कछुक न सूझै ।  
उलटा बान परिधि लागे, सूरा होय सो बूझै ॥  
बिना पियाला अमृत अचवे , नदी नीर भरि राखे ।  
कहै कबीर सो जुग जुग जीवै , राम सुधा रस चाखे ॥

गाना गगन की ओट निसाना है , गगन की ओट निसाना है  
दाहिने सूर चन्द्रमा बाँये , तिनके बीच छिपाना है  
तन की कमान सुरत का रोंदा , सबद बान ले ताना है  
मारत बान बेधा तन ही तन , सतगुरु का परवाना हैं ।  
मारयों बान घाव नहीं तन में , जिन लागा तिन जाना हैं ।  
कहै कबीर सुनो भई साधौं, जिन जाना तिन माना हैं ।  
गगन की ओट निसाना है , गगन की ओट निसाना है  
दाहिने सूर चन्द्रमा बाँये , तिनके बीच छिपाना है

चला हँसा वा देस जहँ पिया बसै चित्तचोर

सुरत सोहागिन है पनिहारिन , भरे ठाढ़ बिन डोर  
धीरे धीरे गाने के साथ साथ प्रकाश भी कम होता जाता है ।

समाप्त